

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 30 September 2026

घाटशिला उपचुनाव 2025: हेमंत सोरेन के दूसरे कार्यकाल की पहली परीक्षा, JMM की जीत का अंतर बढ़ेगा या BJP की रणनीति काम आएगी

Publisher

Published on 10 Nov 2025



झारखंड की **घाटशिला विधानसभा सीट** पर 11 नवंबर को होने वाले उपचुनाव को राज्य की राजनीति में बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यह चुनाव मुख्यमंत्री **हेमंत सोरेन** के दूसरे कार्यकाल की पहली बड़ी परीक्षा मानी जा रही है, क्योंकि यहां के नतीजे राज्य सरकार की जन समर्थन क्षमता और आगामी राजनीतिक रणनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं।

इस उपचुनाव में मुख्य मुकाबला **झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM)** के सोमेश चंद्र सोरेन और **भारतीय जनता पार्टी (BJP)** के बाबूलाल सोरेन के बीच है। दोनों ही उम्मीदवारों ने चुनाव प्रचार में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। इस मुकाबले को झारखंड की राजनीतिक दिशा तय करने वाला माना जा रहा है।

घाटशिला उपचुनाव के लिए चुनाव आयोग और स्थानीय प्रशासन ने सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। मतदान और सुरक्षा के लिए पर्याप्त पुलिस और सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं। हर बूथ पर मतदान व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं।

चुनाव प्रचार के दौरान **इंडिया गठबंधन** और **NDA** दोनों ही अपने-अपने मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए **रोड शो, जनसभाओं और दरबारों** का आयोजन कर रहे हैं। JMM ने इस क्षेत्र में अपने पुराने मतदाताओं और समर्थकों से संपर्क बढ़ाया है, जबकि बीजेपी ने नई रणनीतियों और स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है।

घाटशिला उपचुनाव हेमंत सोरेन के लिए राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। दूसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही यह चुनाव उनके प्रशासन की **लोकप्रियता और जन समर्थन** का आकलन करेगा। JMM के लिए जीत का अंतर बढ़ाना सत्ता की मजबूती का प्रतीक होगा, वहीं बीजेपी के लिए यह परीक्षा होगी कि क्या उनकी रणनीति और स्थानीय मुद्दों पर फोकस उन्हें घाटशिला में सफलता दिला सकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि घाटशिला की **जनसंख्या संरचना और पिछली चुनावी डेटा** इस उपचुनाव को और रोमांचक बनाती

है। पिछले विधानसभा चुनाव में इस सीट पर JMM ने मजबूत पकड़ बनाई थी, लेकिन BJP ने लगातार मेहनत करके अपनी पैठ बढ़ाई है। इस बार मतदाता की भावनाओं, विकास और स्थानीय मुद्दों का प्रभाव निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

सोमेश चंद्र सोरेन (JMM) ने चुनाव प्रचार में मुख्य रूप से विकास कार्यों, ग्रामीण क्षेत्रों में सुधार और स्थानीय युवाओं को रोजगार देने पर जोर दिया है। उन्होंने क्षेत्रवासियों को याद दिलाया कि JMM के शासन में क्षेत्र के विकास के लिए कई योजनाएं शुरू की गई हैं।

दूसरी ओर, **बाबूलाल सोरेन (BJP)** ने केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ दिखाकर वोटर्स को प्रभावित करने की कोशिश की है। उन्होंने स्थानीय मुद्दों जैसे सड़कें, स्वास्थ्य, शिक्षा और जल-संकट को चुनावी मुद्दा बनाया है। BJP की रणनीति पर विशेष ध्यान यह है कि पार्टी नए मतदाताओं और युवा वर्ग को जोड़कर JMM की पकड़ को चुनौती दे।

विशेषज्ञों और राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि घाटशिला उपचुनाव में **मतदाता का मूड और स्थानीय मुद्दों का प्रभाव** निर्णायक होगा। पिछले चुनावों की तुलना में इस बार **मतदान प्रतिशत और युवा मतदाताओं की भागीदारी** को अधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

समीक्षकों के अनुसार, JMM और BJP के बीच यह मुकाबला **सीधे संघर्ष और रणनीति की परीक्षा** के तौर पर देखा जा रहा है। घाटशिला की जनता के फैसले से राज्य की राजनीति में आगामी महीनों में बदलाव देखने को मिल सकता है।

11 नवंबर को होने वाले **घाटशिला उपचुनाव** में हेमंत सोरेन के नेतृत्व और JMM की जन समर्थन क्षमता की परीक्षा होगी। वहीं BJP के लिए यह अवसर है कि वह अपनी रणनीति और स्थानीय मुद्दों के माध्यम से राजनीतिक संतुलन बदल सके। इस उपचुनाव के नतीजे झारखंड की राजनीति में नए समीकरणों को जन्म दे सकते हैं और अगले विधानसभा चुनावों के लिए संकेतक साबित होंगे।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.